सूफीवाद (तसव्वुफ) — तसव्वुफ अथवा सूफीवाद इस्लाम के धार्मिक जीवन की वह अवस्था है जिसमें बाह्य क्रियाओं की अपेक्षा आंतरिक क्रियाओं पर बल दिया जाता है। दूसरे शब्दों में यह इस्लामी रहस्यवाद का बोधक है।

तसव्वुफ का उद्भव पैगम्बर मोहम्मद साहब से हुआ। उनके कुछ सहयोगी जो मदीना की मस्जिद में निर्धनता एवं आत्म संताप का जीवन निर्वाह करते थे 'सूफी पीर' कहलाए।

प्रथम दो शताब्दी के सूफी घोर तपस्वी एवं धार्मिक विचारों से ओतप्रोत थे। इन्होंने तौबा (पश्चाताप) एवं तवक्कुल (ईश्वर में आस्था) के सिद्धांतों पर विशेष बल दिया। प्रारम्भिक सूफियों के विचार पैगम्बर मोहम्मद साहब की शिक्षाओं तक ही सीमित थे। द्वितीय शताब्दी हिजरी के अंत तक तसव्वुफ (सूफीवाद) अद्वैतवाद हो गया। जिसके अंतर्गत खौफ ए खुदा (ईश्वरीय भय) एवं खौफ ए हश्र (निर्णय के दिन के भय) को महत्ता दी जाने लगी। किन्तु खौफ (भय) के साथ ही साथ इश्क (प्रेम) का अंश भी विद्यमान था।

राबिया — इश्क ए-खुदा (ईश्वरीय प्रेम) ने मुझे इस प्रकार ग्रस लिया है कि अब मेरे हृदय में न तो किसी वस्तु के लिए प्रेम है, न ही घृणा।

अबू यजीद अल बिस्तामी — मेरे लबादे के नीचे ईश्वर के अतिरिक्त कुछ नहीं है। मेरी महिमा कितनी अपार है" वास्तव में मैं ईश्वर हूँ। मेरे अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं अतः मेरी आराधना करो। — पहला सूफी सन्त जिसने (फना) शब्द का प्रयोग किया।

Scanned with CamScanner

मंसूर हल्लाज ने स्वयं को (अनहलक) कहा - 810 में।

भारत में 14 सूफी सिलसिले — अबुल फजल (आईने अकबरी)

"इस्लाम में सूफीमत का विकास किसी धर्म में होने वाले रहस्यवादी आन्दोलन की सफलता तथा लोकप्रियता का दिलचस्प एवं महत्वपूर्ण इतिहास है। जहाँ तक रहस्यवाद का सवाल है, "यह वह भावना है जो हमेशा से प्रकृति के रहस्यों को जानने के लिए मानव को प्रेरित करती है।"

अबुल फजल ने 14 सिलसिलों का वर्णन किया है जिनमें, चिश्ती, सुहरावर्दी, कादरी और नक्शबंदी अत्यंत प्रसिद्ध रहे हैं।

1192 में ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती गोरी के साथ आए। अके शेख बख्तियार काकी, अके बाबा फरीद तथा अके निजामुद्दीन औलिया एवं अके अमीर खुसरो।

इब्न उल अरबी का वहदत उल वजूद का सिद्धांत था जिसको नक्शबंदी शेख अहमद सरहिन्दी ने खण्डन करने का प्रयास किया।

ख्वाजा मीर दर्द नक्शबंदी सम्प्रदाय के थे जिन्होंने सूफी मत के बारे में 'इल्मउल किताब' लिखी।

शत्तारी के संस्थापक अब्दुल्ला सत्तारी तथा प्रचारक मो० गौस थे ये हिन्दुओं के प्रति उदार एवं वजूद के अनुयायी थे।

कादिरी — शेख अब्दुल कादिर जिलानी।

खानकाह, मकतूबात, मल्फुजात, बासरा, बेसरा, कलंदर

औलिया - चिल्ला माकूस